भारत के नव-निर्माण में प्रधानमंत्री की भूमिका : एक समीक्षात्मक अवलोकन

मनोज कुमार

भारत के नव–निर्माण में वर्त्तमान प्रधानमंत्री की भूमिका काफी प्रभावशाली दिख रही है। इसका अनुमान हम उनके शपथ–ग्रहण समारोह में सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों की सहभागिता, सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों व राष्ट्रीय गणमान्य व्यक्तियों के आमंत्रण, उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं उनके सूझ–बूझ से किए गए तत्कालीन कार्य–प्रणालियों व भारत के 29 राज्यों में से 19 राज्यों की जनता–जनार्दन की व्यापक समर्थन से मिले अप्रत्याशित चुनावी परिणामों से लगा सकते है। प्रधानमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट का महत्त्वपूर्ण नारा 'सबका साथ सबका विकास' भारत के नव–निर्माण में 'मील का पत्थर' साबित हो रहा है, जो राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध–सुधार व भारत के विकास के लिए प्रधानमंत्री का प्रभावशाली कदम के रूप में दिखाई दे रहा है, जिसका उदाहरण प्रधानमंत्री द्वारा किए प्रयासों, जैसे– वर्तमान में 69वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आसियान देशो के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रण एवं उनकी सहमति, से यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक गतिविधियों में उछाल की सम्भावना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रही है।